

कोना पुं. (तद्.) 1. एक बिंदु पर मिलती हुई दो रेखाओं के मिलने का स्थान, अंतराल, गोशा 2. नुकीला किनारा या छोर प्रयो. उसके हाथ में शीशे का कोना धँस गया 3. छोर का वह स्थान जहाँ लंबाई-चौड़ाई मिलती हो, खूँटे जैसे- दुपट्टे का कोना 4. कोठरी या घर के अंदर की वह सँकरी जगह जहाँ लंबाई चौड़ाई की दीवारें मिलती हैं, गोशा 5. एकांत और छिपा हुआ स्थान जैसे- कोने में बैठकर गाली देना वीरता नहीं है 6. चार भागों में से एक, चौथाई, चहारूम मुहा. कोना झाँकना- किसी बात के पड़ने पर भय या लज्जा से जी चुराना, किसी बात से बचने का उपाय करना।

कोप पुं. (तत्.) 1. क्रोध, टिस, गुस्सा 2. आयुर्वेद में शारीरिक त्रिदोष विकार।

कोपना अ.क्रि. (तद्.) क्रोध करना, नाराज होना।

कोपभवन पुं. (तत्.) वह स्थान जहाँ कोई रूठी हुई स्त्री या नायिका घर के प्राणियों से रूठ कर जा रहे उदा. कोपभवन गवनी कैकेयी -तुलसी।

कोपभाजन पुं. (तत्.) किसी के गुस्से का शिकार।

कोपल स्त्री. (देश.) वृक्ष आदि की छोटी, नई और मुलायम पत्ती, अंकुर, कल्ला, कनखा।

कोपानल पुं. (तत्.) 1. क्रोध की अग्नि, क्रोधाग्नि 2. क्रोध रूपी अग्नि।

कोफ्त पुं. (फा.) 1. रंज, दुःख, खेद 2. परेशानी 3. लोहे आदि पर सोने चाँदी की पच्चीकारी।

कोफ्ता पुं. (फा.) कूटे हुए मांस अथवा आलू आदि का बना एक प्रकार का कबाब जो जामुन के आकार का होता है और जिसके अंदर अदरक, पुदीना खसखस, भुने चने का आटा आदि भरा रहता है।

कोबरा पुं. (तद्.) 1. निवास, कोठरी, कोठर 2. दे. कोपर (अं.) नाग की एक प्रजाति जो अत्यधिक विषैली होती है।

कोमल वि. (तत्.) 1. मुदु, मुलायम, नरम 2. सुकुमार, नाजुक 3. अपरिपक्व 4. सुंदर, मनोहर।

कोमलता स्त्री. (तत्.) 1. मृदुलता, नरमी 2. मधुरता, लालित्य।

कोमलांग वि. (तत्.) 1. कोमल अंगों वाला, जिसका शरीर मृदुल हो।

कोमलांगी वि. (तत्.) सुकुमार अंगों वाली।

कोमला स्त्री. (तत्.) 1. शांत, करुण और अद्भुत रस-प्रधान नाटकों की रचना में प्रयुक्त एक वृत्ति (शैली) जिसमें कोमल वर्णों (वर्गों के तृतीय वर्ण य, व, स), छोटे समासों और अनुप्रास अलंकार का प्रयोग होता है।

कोयल स्त्री. (तद्.) काले रंग की एक प्रकार की चिड़िया, कोकिला, कोइली।

कोयला पुं. (देश.) 1. वह जला हुआ अंश या पदार्थ जो जली हुई लकड़ी के अंगारों को बुझाने से बचा रहता है 2. एक प्रकार का खनिज पदार्थ जो जलाने के काम में आता है मुहा. कोयलों पर मोहर होना- केवल छोटे और तुच्छ खर्चों की अधिक जाँच पड़ताल करना, तुच्छ पदार्थ की अनावश्यक रक्षा करना।

कोया पुं. (देश.) 1. आँख का ढेला 2. आँख का कोना 3. कटहल के अंदर की वह गुठली जो चारों ओर गूदे से ढँकी रहती है, कटहल का बीजकोश 4. रेशम के कीड़े की खोल या आवरण।

कोर स्त्री. (तद्.) 1. किनारा, तट 2. सिरा, हाशिया 3. गोशा, कोना 4. अंतराल 5. द्वेष, बैर, वैमनस्य 6. ऐब 7. कमी, कसर 8. हथियार की धार 9. बाढ़ 10. पंक्ति, कतार मुहा. कोर निकालना- किनारा बनाना; कोर मारना या छाँटना- बढ़े हुए धारदार किनारे को कम करना या बराबर करना; कोर दबाना- किसी प्रकार के दबाव के वश में होना पुं. (अं.) पलटन, सैन्यदल जैसे- कैडेट कोर।

कोरक पुं. (तत्.) 1. कली मुकुल 2. फूल या कली का वह बाहरी भाग जो प्रायः हरा होता है, फूल की कटोरी 3. कमल की नाल या डंडी, मृणाल 4. चोटक नाम का गंधद्रव्य 5. शीतल चीनी।